WWW.IJRPR.COM

International Journal of Research Publication and Reviews

Journal homepage: www.ijrpr.com ISSN 2582-7421

जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Dr. Anita Verma

Pestle Weed College of Information Technology, Dehradun

सार संक्षेप :

प्रस्तुत शोध में जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य है जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना है – जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्रस्तुत शोध में केवल जनपद देहरादून के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों को सीमांकन के रूप में सम्मिलित किया गया है। शोध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनपद देहरादून के (उत्तराखण्ड) से सम्बद्ध शहरों और ग्रामों के छात्राओं को इस शोध के लिये जनसंख्या के रूप में लिया गया है और प्रस्तुत शोध से निकाले गये निष्कर्ष का सामान्यीकरण इसी जनसंख्या पर किया जायेगा। शहरी व ग्रामीण विद्यालयों से 50–50 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रस्तुत शोध समस्या के लिये शोधकर्ता ने स्वनिर्मित व्यावसायिक आकांक्षा मापनी उपकरण के रूप में प्रयुक्त की है। अध्ययन कार्य के लिये संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं के परीक्षण करने के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया। 0.05 विश्वसनीय स्तर पर तालिका का मान 2.01 है, व 0.01 विश्वसनीय स्तर पर तालिका का मान 2.68 है जोकि प्राप्त श्जश 4ण्18 से कम है। अतः दोनों मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

मूल शब्द – शहरी क्षेत्र ,ग्रामीण क्षेत्र, आकांक्षा स्तर, व्यावसायिक, महत्वाकांक्षी, साक्षरता चिन्तनशील, जनशिक्षा

प्रस्तावना –

प्रत्येक देश अपनी सामाजिक संस्कृति को पूर्णरूपेण पनपने के लिये और साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिये अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है क्योंकि शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। शिक्षा को प्रसार हेतु भारत में समय–समय पर अनेक प्रयत्न किये गये, बहुत सी नीतियों को लागू किया गया लेकिन शिक्षा का प्रसार अभी भी निरक्षर समाज में एक समस्या बना हुआ है। भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता पर प्रायः चर्चा की जाती है। कोठारी आयोग ने भी पडोसी स्कूल योजना के द्वारा शैक्षिक अवसरों की समानता पर बल दिया है।

संसार के समस्त प्राणियों में मानव सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है। जन्म से ही मानव चेतन परिस्थितियों के प्रभाव के कारण चिन्तनशील होता है। जिसके कारण वह इच्छायें प्रकट करता है। आकांक्षा के कारण ही वह आसपास के व्यक्तियों एवं वस्तुओं को देखकर स्वाभाविक रूप से क्रियाशील रहता है। मानव जन्म से ही जिज्ञासु होता है। यदि मनुष्य के अंदर आकांक्षायें समाप्त कर दी जाये तो उसका जीवन स्थिर सदृश्य हो जायेगा। आकांक्षा ही मनुष्य को जीवन स्तर में सुधार हेतु प्रेरित करती है। आकांक्षा के कारण ही मनुष्य चाहे किसी भी समाज से संबंद्व हो, किसी भी कार्य को सम्पादित करता है।

व्यावसायिक शिक्षा पर विभिन्न आयोगों द्वारा निम्नलिखित सिफारिशें की गई जो निम्न हैं –

हन्टर कमीशन (1882 ई०) ने माध्यमिक विद्यालयों के सभी प्रायोगिक विषयों को जीवनोपयोगी बनाने की सिफारिश की थी।

ऐवट वुड रिपोर्ट (1937 ई0) ने देश में नियोजित एवं क्रमिक व्यावसायिक शिक्षा की संकल्पना की थी।

वर्धा शिक्षा योजना (1937 ई0) ने बेसिक शिक्षा प्रक्रिया में शिल्प केन्द्रित शिक्षा को प्रोत्साहित किया था।

कोठारी आयोग (1964 ई0) ने कार्यानुभव को बढ़ावा देने तथा सामाजिक उत्पादकता की संस्तुति की थी। शिक्षा के व्यावसायिककरण का उद्देश्य छात्रों में रोजगार की क्षमताओं का विकास करना तथा उन्हें विशिष्ट रोजगार के लिये तैयार करना था। आयोग ने स्वरोजगार कृषि, कुटीर उद्योग, कृषि उद्योग आदि पर बल दिया।

व्यावसायिक आकांक्षा के कारण व्यक्ति अपने आस–पास के व्यक्तियों की सफलता के बारे में चिन्तनशील हो उठता है और अपने आकांक्षा स्तर को उन व्यक्तियों के करीब में ले जाता है। वह सोचता है कि एक दिन वह भी उन सफल व्यक्तियों के समान व्यवसायों वाला होगा। यही आकांक्षा उसे सफल व्यक्ति तक पहुंचाने की नींव है।

जनशिक्षा संस्थान (जेएसएस) भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के स्कूल, शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा प्रायोजित है। इसका उद्देश्य 15 साल से 35 साल तक के युवाओं को अनौपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करके स्वावलंबी बनाना है। इस संगठन का कार्य शहरी/ग्रामीण जनसंख्या विशेषकर नये साक्षरों, अर्ध साक्षर, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिला और बालिकाओं, झुग्गी झोपड़ियों के निवासियों, प्रवासी, कामगारों आदि के लिये सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े और शैक्षिक रूप से अलाभ प्राप्त समूहों के लिये शैक्षिक, व्यावसायिक करना है। वर्तमान में देश में 221 जेएसएस है, जहां असंख्य व्यावसायिक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

मनरेगा – विश्व की सबसे बड़ी तथा महत्वाकांक्षी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 2006 में आरंभ की गई। लागू होने के 6 वर्ष भीतर इस योजना ने वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदल डाली। 2010–11 के दौरान इस योजना के तहत 549 करोड़ परिवारों को रोजगार मिला है। इस योजना के द्वारा अब तक करीब 1200 करोड़ रोजगार दिवस का कार्य हुआ है।

इच्छा और आकांक्षा मन में सहज ही पैदा नहीं होती है। अक्सर देखा गया है कि अधिकांश इच्छायें व आकांक्षायें किसी प्रतिमान/उपमान समक्ष आने पर प्रतिक्रिया स्वरूप ही जन्म लेती हैं जैसे हम किसी वस्तु को देखते हैं तो उसे पाने की इच्छा होती है।

गांधी के अनुसार – ''मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा में विभिन्नता मनुष्य के चिन्तनशील स्तर के कारण होती है। जिस मनुष्य के अन्दर तर्क व चिन्तनशक्ति जितनी प्रबल व सकारात्मक होती है। उस मनुष्य के अन्दर शैक्षिक आकांक्षा भी उतनी ही तीव्र होगी।

अरविन्द घोष के अनुसार – ''मनुष्य अपनी उच्च शैक्षिक आकांक्षा के कारण अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न भी अपनी शैक्षिक आकांक्षाओं के द्वारा ही करता है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के उदाहरण से भी स्पष्ट है कि यदि मनुष्य की आकांक्षा का स्तर उच्च है तो वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करके अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति को भी उच्च कर सकता है। मनुष्य अपनी आकांक्षा के कारण ही चन्द्रमा पर अपना पैर जमा सका है। तथा अंतरिक्ष में भी घर बसाने का प्रयास जारी है। शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ प्रशासक व्यवसायी या नेता बनता है। मनुष्य उच्च आकांक्षा से प्रेरित हो कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्व मनोयोग से कार्य करता है तथा लक्ष्य प्राप्ति के बाद मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा में और अधिक विस्तार हो जाता है। मनुष्य अपनी विचारधारा को मूर्तरूप शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा ही करते हैं।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में आकांक्षा स्तर एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास करना है और इन सबके विकास में शैक्षिक संस्थाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मुसोलिन के अनुसार – जिस व्यक्ति में आकांक्षा जीवित होती है वह मनुष्य किसी भी परिस्थिति में शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा के प्रति जागरूकता मानव की आकांक्षा के कारण ही होती है। यदि बालक में शिक्षा के प्रति आकांक्षा का अभाव आ जाये तो वह शिक्षा के प्रति उदासीन हो जायेगा और बालक आगे की शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकेगा। भारतीय समाज की लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति कुछ आकांक्षायें हैं देश के प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा का प्रभाव भी व्यक्ति की आकांक्षा पर पूरा–पूरा पड़ता है। विचारधारा के अनुरूप वह उद्देश्य का निर्धारण करता है और निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति वह अपनी आकांक्षा के द्वारा करता है।

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर –

हॉपी ने बताया कि सभी व्यक्तियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर एक समान नहीं होते। उदाहरणार्थ, कुछ व्यक्ति का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर सदैव ऊंचा होता है तो कुछ का नीचा और कुछ व्यक्ति निर्णय ही नहीं ले पाते कि व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ऊंचा रखा जाये अथवा नीचा। एक व्यक्ति दिन–रात काम करके महान लेखक बनना चाहता है तो एक कृषक मेहनत कर अच्छी फसल उगाना चाहता है।

जीवन में आगे बढ़ने व अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये व्यावसायिक आकांक्षाओं का होना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार जब व्यक्ति की आकांक्षा व्यवसाय से संबंधित होती है तो व्यावसायिक आकांक्षा का रूप ले लेती है।

समस्या कथन –

ग्रामों एवं शहरों के विद्यार्थियों की उनकी अपनी योग्यताओं के अनुसार भविष्य के बारे में व्यवसाय हेतु क्या उपयुक्त कार्य है? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

निष्कर्षों का व्यावहारिक रूप से प्रयोग करते हुए ग्रामीण व शहरी छात्राओं को व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किये जायें।

इस प्रकार **'' जनपद देहरादून के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन''** समस्या का जन्म हुआ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

वर्तमान समय में इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिये भी बढ़ जाती है क्योंकि माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम चुनने की स्वतंत्रता छात्र–छात्राओं को होती है। ऐसी स्थिति में वे उपयुक्त विषय जो उनकी आकांक्षा के अनुरूप हों तथा वे उन्हें उस व्यवसाय की ओर ले जाने में समर्थ हैं या नहीं इस बात की जानकारी हेतु व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ज्ञात करना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य –

जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना –

श0 . जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या का सीमांकन –

प्रस्तुत शोध में केवल जनपद देहरादून के शहरी व ग्रामीण विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की विधि –: प्रस्तुत शोध में जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या –

जनपद देहरादून (उत्तराखण्ड) से सम्बद्ध शहरों और ग्रामों की छात्राओं को इस शोध के लिये जनसंख्या के रूप में लिया गया है और प्रस्तुत शोध से निकाले गये निष्कर्ष का सामान्यीकरण इसी जनसंख्या पर किया जायेगा।

न्यादर्श का विवरण –

अध्ययन से सम्बन्धित जनसंख्या से न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम जनपद देहरादून के 5 शहरी विद्यालयों तथा 5 ग्रामीण विद्यालयों की एक सूची तैयार की गई। प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्राओं का लॉटरी विधि द्वारा चयन किया गया। इस प्रकार शहरी व ग्रामीण विद्यालयों से 50–50 छात्राओं का चयन किया गया।

अनुसंधान उपकरणों का विवरण –

प्रस्तुत शोध समस्या के लिये कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण शोधकर्ता ने स्वनिर्मित व्यावसायिक आकांक्षा मापनी उपकरण के रूप में प्रयुक्त की है।

व्यावसायिक आकांक्षा मापनी – व्यावसायिक आकांक्षा मापनी में व्यवसाय की आकांक्षा से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त होती है। इस मापनी में कुल 15 प्रश्न दिये गये हैं तथा प्रत्येक प्रश्न के लिये 3 विकल्प व्यवसाय के रूप में दिये गये हैं जिनमें से उत्तर देने वाला किसी एक व्यवसाय को चुनने के लिए स्वतंत्र होता है।

उपकरण की विश्वसनीयता

प्रस्तुत अध्ययन विश्वसनीयता के मानकों पर उच्च विश्वसनीयता प्रदर्शित करता है। उपकरण के निर्माण के पश्चात् परीक्षण तथा पुनः 5 परीक्षण द्वारा स्थायित्व गुणांक 0.84 पाया गया है। जो यह प्रदर्शित करता है कि उपकरण में उच्च श्रेणी की विश्वसनीयता है।

अंकीकरण – यहां 15 प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक के तीन–तीन विकल्प दिये हुए हैं। प्रत्येक प्रश्न के प्रत्येक विकल्प को एक निश्चित अंक दिया गया है

प्रदत्तों का संकलन –

समस्त विद्यालयों से उपकरणों के प्रशासन के बाद प्रदत्तों के संकलन के लिये व्यवसायिक आकांक्षा मापनी को लिया गया। सभी प्रश्नों के प्रत्येक विकल्प के लिये निश्चित अंक प्रदान किये गये हैं। सभी प्रश्नों के अंकों को जोड़कर शहरी व ग्रामीण छात्राओं के लिये कुल प्राप्तांक प्राप्त किये गये। इस प्रकार प्रदत्त संकलन कार्य किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण –

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के लिये संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं के परीक्षण करने के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया।

आंकड़ों के विश्लेषण

शोधकर्ता आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् ही किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकता है तथा

आंकड़ों के विश्लेषण के साथ–साथ उनका विवेचन भी किया जाता है। जिससे कि सूचनायें स्पष्ट हो सकें।

परिकल्पनाओं का परीक्षण –

उद्देश्य – जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

भ्c रू जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर

क्षेत्र	**छात्राओं की सं०**	**डमंद**	**ैण्क्**	**व्ण्ज**	**त्मण्ज**
शहरी	50	15ण्82	5ण्49	4ण्18	ंज 0ण्05 समअमस त्र 2ण्01
ग्रामीण	50	14ण्55	3ण्78		ंज 0ण्01 समअमस त्र 2ण्68

तालिका 4.5 से स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा स्तर पर शहरी छात्राओं का मध्यमान 15.82 तथा प्रामाणिक विचलन 5.49 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार ग्रामीण छात्राओं का मध्यमान 14.55 तथा मानक विचलन 3.78 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों का आंकलित श्जश मान 4.18 प्राप्त हुआ। 0.05 विश्वसनीय स्तर पर **तालिका** का मान 2.01 है, व 0.01 विश्वसनीय स्तर पर **तालिका** का मान 2.68 है जोकि प्राप्त श्जश मान 4.18 से कम है। अतः दोनों मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया है। **अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।**

इस प्रकार स्पष्ट है कि जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक स्तर में सार्थक अन्तर है।

ग्राफ 1 जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं का व्यावसायिक

आकांक्षा स्तर

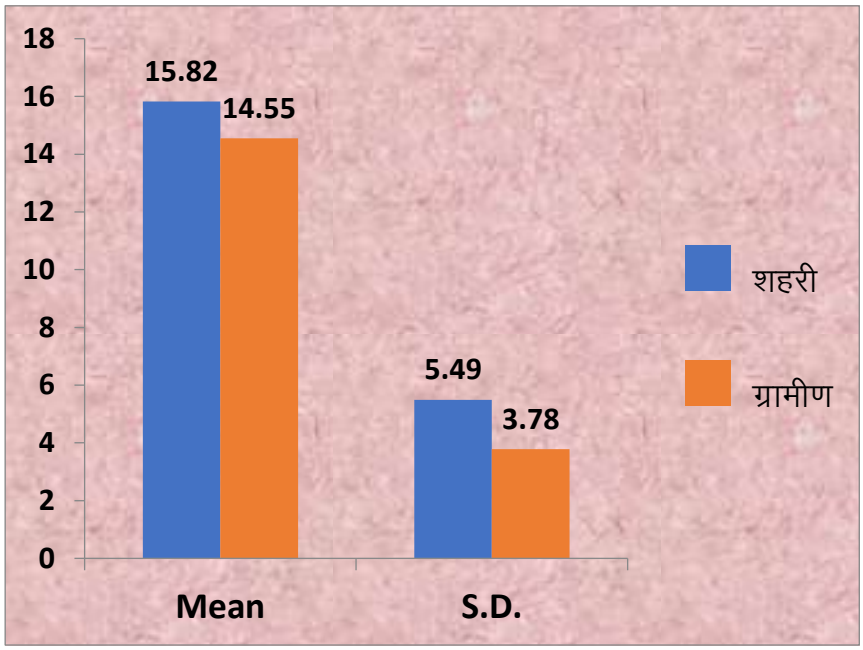

परिणामों की व्याख्या –

प्रस्तुत शोध 'जनपद देहरादून के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' में पाया गया कि ग्रामीण व शहरी छात्राओं

के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में अन्तर है। ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में समानता नहीं होती है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व –

छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा बढ़ाने के लिये अभिभावकों व परिवार के अन्य सदस्यों को अपने बच्चों को उचित पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना चाहिये तथा उनकी समस्याओं के समाधान में उनकी सहायता करनी चाहिये। इस प्रकार उनकी व्यावसायिक आकांक्षा बलवती होगी जो कि उन्हें आत्मविश्वास प्राप्त करने में सहायता देगी और भविष्य में अपनी प्रकृति के अनुरूप व्यावसायिक चयन करके देश के विकास में अपना योगदान दे सकेंगें।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल व्यावसायिक आकांक्षा को ही ध्यान में रखा गया। इसके अतिरिक्त छात्रों की सामाजिक आकांक्षा, शैक्षिक आकांक्षा आदि का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
2. अभिभावकों की छात्र–छात्राओं के प्रति व्यावसायिक आकांक्षा तथा छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. आर्थिक सामाजिक स्तर तथा व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. गैरेट ई0 हैनरी (1995) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स, पेज–560।
2. गुप्ता एस.पी. एवं अल्का गुप्ता (2004) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पेज 597।
3. गुप्ता एस0पी0 (1986) आधुनिक मनोविज्ञान इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन, पेज 418।
4. गुप्ता एस.पी. (2004) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन पेज 579।
5. कपिल, एच0के0 (1992) अनुसंधान विधियाँ, आगरा, भार्गव पुस्तक प्रकाशन पेज – 320।
6. पाठक, पी.डी. (2005) ''आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान'' इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन पेज 572।
7. राय, पारसनाथ ''अनुसंधान परिचय'' आगरा, लक्ष्मी नारायण, अग्रवाल पेज – 400।
8. सारस्वत, मालती (2003) ''शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा'' इलाहाबाद, आलोक प्रकाशन पेज – 630।
9. सिंह, अरूण कुमार (2005) ''मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना, मोतीलाल बनारसीदास पेज– 518।